International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences (IJARMS)
Volume 1 Issue 1, 2018

कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में जीवन का सामाजिक आर्थिक अध्ययन

डा0 रत्नेश शुक्ल
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, श्री राम कृष्ण महाविद्यालय, कुरारा, हमीरपुर।

संक्षेप

औद्योगीकरण और नगरीकरण के वर्तमान युग में, प्रवासी जनसंख्या का अनुकूलतम बसाव और नगरों का सकारात्मक विकास नितान्त आवश्यक है ताकि नगरीय विकास सुनियोजित हों और जीवन की दशाएँ उत्तम हो। पूरब का मानचेस्टर, भारत का ग्यारहवां बृहत्तम महानगर, उ0प्र0 की वाणिज्यिक राजधानी कानपुर देश के उन चंद औद्योगिक नगरों में गिना जाता है जो गिरते गिरते उठ खड़े होने के हौसले से भरा है, अपने गौरवशाली अतीत को पुनजीर्वित करते हुए वह एक बार फिर जीवन्त नगरों को कोटि में गिना जाता है। नीति निर्धारकों का लक्ष्य था कानपुर महानगर में नगरीकरण के बिना औद्योगीकरण करना परन्तु हुआ औद्योगीकरण के बिना नगरीकरण। कानपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि जन्म, मृत्यु जैसे जैविक कारकों का प्रतिफल नहीं बल्कि प्रवास जैसी सामाजिक लेन–देन की प्रक्रिया का प्रतिफल है। चतुर्दिक ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त निर्धनता तथा बेरोजगारी के कारण गांव से नगर को प्रवास हुआ परन्तु नगरीय पोषण क्षमता के घट जाने, कार्यावसरों व रोजगार की कमी के कारण ये जनसंख्या का संक्रेन्द्रण अनाधिकृत रूप से मलिन बस्तियों के रूप में हुआ है यह स्तर निश्चित रूप से ग्रामीण जीवन स्तर से निम्न था जिससे नगरीय विकास का नहीं अपितु नगरीय अवनयन या नगरों के ग्रामीणकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ है।

कानपुर महानगर के प्रत्येक जोन में स्थित मलिन बस्तियों में 103 नमूना प्रति जोन एकत्रित किए गए। प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि महानगर में आज भी 18 प्रतिशत ऐसे आवास है जो घासफूस, कच्ची ईंटों और गारा से निर्मित है। 40 प्रतिशत आवास एक कमरे वाले हैं और 10 प्रतिशत आवासों में न तो बिजली है, न सुरक्षित पेयजल और न ही शौचालय। कानपुर की 20 प्रतिशत जनसंख्या ऐसी है जो मलिन बस्तियों में निवास करती। मलिन बस्तियों में निवास करने वाली जनसंख्या में 58 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 5 वर्ष – 35 वर्ष के मध्य है। मलिन बस्ती जनसंख्या में सर्वाधिक 39.2

प्रतिशत अनुसूचित जातियां निवास करती है। उल्लेखनीय तथ्य है कि मलिन बस्तियों में निवास करने वाली कुल जनसंख्या में 35.8 प्रतिशत जनसंख्या ही साक्षर है तथा 24 प्रतिशत जनसंख्या बेरोजगार है। 21 प्रतिशत घर ऐसे जिनकी मासिक आय 500 रू0 प्रति माह से कम है।

मलिन बस्तियों 51 प्रतिशत घर घासफूस, गारा और कच्ची ईंटों से बने हैं, यहाँ पेयजल की आपूर्ति का प्रमुख स्रोत सरकारी नल है। 29 प्रतिशत जनसंख्या को सामुदायिक शौचालय की सुविधा मुहैइय्या है वही 59 प्रतिशत जनसंख्या आज भी खुले मैदानों का चयन करती है। सीवर सिस्टम के नाम पर खुली हुई नालियां है जो कूड़ा करकट व सफाई के अभाव में जाम हो जाती है।

कानपुर महानगरीय नियोजन के लिए आज आवश्यकता कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन की है। आवासों का आवंटन रोजगार स्थल से दूरी के आधार पर, बिजली, पेयजल और शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराना तथा गुणवत्ता में सुधार, सीवर सिस्टम को सुचारू तथा ठोस कूड़ा करकट का प्रबन्धन करना तथा साथ ही मलिन बस्तियों को अपराधों की शरण स्थली के रूप में विकसित होने से रोकना ताकि नगरीय पर्यावरण हितकारी रहें।

उल्लेखनीय पारिभाषिक शब्दावली: औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्रवास, नगरीय अवनयन।

प्रस्तावना

भारत का ग्यारहवां बृहत्तम महानगर, देश का चौथा औद्योगिक नगर, उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी, कभी विश्व मंच पर उत्तर भारत के मानचेस्टर (सिंह, 1990, पृ. 36) की उपाधि से सुशोभित कानपुर नगर धीरे–धीरे कारखानों के पतन होते जाने से उद्योगों की कब्रगाह बन गया लेकिन इसकी शोक गाथाएँ अभी लिखी ही जा रही थीं कि अपने गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित कर वह एक बार फिर उठ खड़ा हुआ और आज जीवन्त नगरों की कोटि में गिना जाता है।

कानपुर महानगर के विकास के प्रथम चरण में औद्योगीकरण नगरीकरण प्रक्रिया के सहगामी थी परन्तु वर्तमान में महानगर में नगरीकरण प्रक्रिया पाश्चात्य नगरों की भांति औद्योगीकरण के सहगामी नहीं है। औद्योगीकरण के अभाव में नगरीकरण तेजी से हुआ फलतः चतुर्दिक स्थिति ग्रामीण अभावग्रस्त जनसंख्या के प्रवास के फलस्वरूप जनसंख्या संकेन्द्रण से नगरीय आकार बढ़ता गया परन्तु नगरीय पोषण क्षमता के घट जाने, कार्यावसरों व रोजगार की कमी, उचित आवासों के अभाव में, कम किराया देने की विवशता में, बहुत से प्रवासी खाली

स्थानों पर अतिक्रमण करने को विवश होते हैं जिससे मलिन बस्तियों का विकास होता है। आज महानगर की **20%** जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करती है।

शोधपत्र के उद्देश्य

1. कानपुर महानगर में नगरीय आकर्षण शक्ति और ग्रामीण अपकर्षण शक्ति की क्रियाशीलता के मध्य प्रवास एवं मलिन बस्तियों के विकास का सकारण अध्ययन करना।
2. कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं व जीवन की दशाओं का मात्रात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन करना।
3. महानगरीय तंत्र में नगरीय गरीबी उन्मूलन एवं मलिन बस्तियों के पुनर्बसाव हेतु नियोजन नीति प्रस्तुत करना।

पूर्व साहित्य का पुर्नावलोकन

कानपुर महानगर के संदर्भ में मलिन बस्तियों के का समय–समय पर विभिन्न भूगोलवेत्ताओं नें अध्ययन किया है । इस श्रृंखला में हरिहर सिंह, कुमरा, सिंह, मजूमदार का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । हरिहर सिंह (1972) नें कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों का मानचित्रण Kanpur: A Study in Urban Geography के अन्तर्गत किया। कुमरा (1982) ने कानपुर के पर्यावरणीय अवनयन का अध्ययन किया तो एस0 एन0 सिंह (1990)ने कानपुर के उद्योगों का विस्तृत अध्ययन किया। मजूमदार (1960) ने अपने अध्ययन में सामाजिकता के पक्ष का समावेश करते हुए विषय को एक नई दिशा प्रदान की। उपरोक्त विद्वानों नें कानपुर नगर के अध्ययन हेतु एक आधार तैयार किया। विषयों में विभिन्नता के बावजूद भी मलिन बस्ती प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष संदर्भ के रूप में अध्ययन में सदैव सम्मिलित रहा। नवीन शोध कार्यों में तबस्सुम (2011) का भारत में मलिन बस्तियों पर किया गया शोध, अग्निहोत्री (1994) का मलिन बस्तियों पर किया गया सर्वेक्षण तथा सिन्हा (2007) का नगरीय मलिन बस्तियों में पारिस्थितिकीय एवं जीवन गुणवत्ता पर किया गया कार्य उल्लेखनीय है।

विधि तंत्रः अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोधपत्र का अध्ययन क्षेत्र कानपुर महानगरीय क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत कानपुर नगर के साथ–साथ परिधीय ग्रामीण क्षेत्रों को भी सम्मिलित किया गया है। कानपुर महानगरीय क्षेत्र में शुक्लागंज न्यायपालिका, उन्नाव न्यायपालिका, बिठूर नगर पंचायत को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र विश्व मानचित्र पर $25^{0}26'$ और $25^{0}58'$ उत्तरी आक्षांश $79^{0}31'$ और $80^{0}34'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जिसकी उत्तरी सीमा गंगा नदी और दक्षिणी सीमा पाण्डु नदी द्वारा

निर्मित की जाती है। जनपद के पूर्व में फतेहपुर, उत्तर में उन्नाव, पश्चिम व दक्षिण में कन्नौज, हमीरपुर तथा कानपुर देहात स्थित हैं।

प्रयुक्त उपकरण एवं तकनीकि

वर्णनात्मक प्रकार के क्षेत्र अध्ययन अभिकल्प को आंकड़ों के संग्रहण हेतु प्रयुक्त किया गया जिसके लिए हमने साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया। साक्षात्कार के साथ–साथ अवलोकन को भी शोध उपकरण के रूप में सम्मिलित किया गया।

चर

प्रस्तुत शोधपत्र में मलिन बस्ती निवासियों के जीवन स्तर को परतंत्र चर की तरह प्रयुक्त किया तथा आयु संरचना, शैक्षिक स्तर, रोजगार का स्तर, आय स्तर, गृहों का प्रकार आकार, मूलभूत सुविधाओं की प्राप्तता को स्वतंत्र चर के रूप में। संक्षेप में मलिन बस्ती निवासियों का गुणात्मक जीवन स्तर आयु संरचना, शैक्षिक स्तर, रोजगार का स्तर, आय स्तर, गृहों का प्रकार आकार, मूलभूत सुविधाओं की प्राप्तता आदि पर निर्भर करते हैं।

प्रतिचयन निर्धारण

अंश प्रतिचयन द्वारा समष्टि या जनसंख्या का स्तरीकरण उसी प्रकार किया गया जैसे स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्शन में। प्रत्येक स्तर में आवश्यक अंश (कोटा) इकाइयों का चुनाव विवेक अनुसार किया गया। इस प्रकार कानपुर महानगर के प्रत्येक जोन में स्थित मलिन बस्तियों में 103 नमूना प्रति जोन एकत्रित किए गए।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण

अंश प्रतिचयन की तकनीकी को प्रयुक्त करके कानपुर महानगर के सभी जोन से 721 मलिन बस्ती निवासियों का साक्षात्कार करके आंकड़े एकत्र किए।

1. कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में प्रवासी तथा अनप्रवासी निवासियों का निर्धारण।

2. कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में गुणवत्तापूर्ण जीवन दशाओं सम्बन्धी आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया।

कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में गुणवत्तापूर्ण जीवन दशाओं सम्बन्धी आंकड़ों का विश्लेषण उत्तरवादियों द्वारा दिये गए उत्तर के आधार पर किया गया। सारणी के आधार पर पाई आरेख, मिश्रित, दण्डारेख, विभाजित दण्डारेख, पिरामिड की रचना की गई। भौगोलिक सूचना प्रणाली के आधार पर सुविधाओं की प्राप्तता का मानचित्र उद्धत किया गया।

शोधपत्र के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र अधोलिखित निष्कर्ष सम्मुख आते हैं :–

कानपुर महानगर में प्रवास एवं मलिन बस्तियों का विकास

कान्हपुर से कानपुर महानगर तक के विकास क्रम का प्रथम चरण प्रारम्भ होता है 1857 की क्रान्ति से। 1801 ई0 में यह क्षेत्र अंग्रेजी शासको नियंत्रण में आ गया, 1803 में यह क्षेत्र छावनी के रूप में परिणति हो गया, 1833 में गंगा नगर का निर्माण हुआ और गंगा पर नाव का पुल बना। प्रारम्भिक चरण में नगरीकरण में यह प्रक्रिया औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया की सहगामी थी। 1859 में कानपुर में (कानपुर में) रेल आयी, इससे पूर्व 1857 में गंगा पर लोहे का पुल बन चुका था। सैनिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेक कारखानों की स्थापना हुयी जिसका प्रारम्भ 1860 हारनेस और सैडलरी की स्थापना के साथ शुरू होता हैं। तत्पश्चात 22 नवम्बर 1861 को पहली बार म्युनिसपालिटी कमेटी का गठन हुआ, 1864 में एल्गिन, 1870 में लाल इमली, 1885 में विक्टोरिया मिल, नार्थ ईस्ट प्राविन्सेज जूट मिल, 1883 में जान्स आइस फैक्ट्री की की स्थापना हुई। 1951–61 के मध्य सर्वाधिक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 38.36% थी जो औद्योगिकीकरण का ही परिणाम थी। कानपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि जन्म, मृत्यु जैसे जैविक कारकों का प्रतिफल नहीं बल्कि प्रवास जैसी सामाजिक लेन–देन की प्रक्रिया का प्रतिफल है। 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या का प्रवास गॉव से होता हैं (मजूमदार, 1962, पृ. 72)। निर्धनता और बेरोजगारी से ग्रस्त ग्रामीण जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में उपलब्ध रोजगार अवसरों व सुविधाओं से आकृष्ट हो नगर में आ बसी। वास्तव में नगर स्वयं विकसित नही होते अपितु जो कि नगरीय प्रभाव क्षेत्र के गांवों की विभिन्न सुविधाओं की मांगानुसार नगर के लिए लक्ष्य निश्चित करते हैं जिसे नगर केन्द्रीय स्थल के रूप में सम्पन्न करते हैं (मार्क जेफरसन, 1931, पृ. 446)। आज महानगर रक्षा कारखानों (आयुध) और लेदर इन्ड्रस्टी से ही नहीं जाना जाता हैं वरन् कोचिंग इन्ड्रस्टी, शैक्षिक केन्द्र तथा व्यापारिक स्थल के रूप में अपनी पहचान रखता है। 1919 में क्राइस्ट चर्च की स्थापना फिर राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों जैसे I.I.T., राष्ट्रीय शर्करा अनुसंधान, भारतीय दलहन अनुसंधान आदि आकर्षण कारकों ने समीपवर्ती जनसंख्या को पुन: आकर्षित किया। कानपुर महानगर में ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी और गरीबी के फलस्वरूप हुए अशिक्षित अकुशल श्रमिकों के प्रवास से तथा महानगर में श्रम की मांग में हुई कमी से कानपुर महानगर का ग्रामीणकरण प्रारम्भ हो गया। कानपुर महानगर की जनसंख्या पिछले दशक में तेजी से बढ़ी। 1981–1991 में जनसंख्या वृद्धि दर 26.5% थी जबकि 1991–2001 में यह बढ़कर 35% हो गई। पिछले दो दशकों में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ रोजगार की

आवश्यकता और मांग में भी वृद्धि हुई है। साथ–साथ ही श्रमिकों की रोजगार के अवसरों की खोज और उचित रोजगार की उपलब्धता अर्थात् श्रम की मांग और पूर्ति के मध्य अन्तराल में वृद्धि हुई है । साथ ही साथ आवासों की मांग में भी वृद्धि हुई है। उचित आवासों के अभाव में, कम किराया देने की विवशता में, बहुत से प्रवासी श्रमिक खाली स्थानों पर अतिक्रमण करने को विवश होते हैं जिससे मलिन बस्तियों का विकास हुआ। कानपुर महानगर में प्रवासी श्रमिक ग्रामीण जीवन से निम्नस्तरीय जीवन नगर में व्यतीत करते हुए मूलभूत सुविधाओं के अभाव में, विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए भी नगर में पड़े रहते हैं। इस प्रकार का निम्न स्तरीय प्रवास ग्राम से नगर की ओर स्थानान्तरण मात्र नहीं अपितु ग्रामीण गरीबी का नगरीय गरीबी में रूपान्तरण होगा। इससे नगरीय पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और इस प्रकार का प्रवास प्रादेशिक असमानता को जन्म देने वाला होगा जिससे कोई सामाजिक आर्थिक विकास उत्पन्न नहीं होगा। कानपुर महानगर में प्रवास के आधार पर मलिन बस्ती जनसंख्या आंकड़ों से ज्ञात होता है कि मलिन बस्तियों में निवास करने वाली 87.66 % जनसंख्या प्रवासी हैं। अधोलिखित सारणी 1 से स्पष्ट हैं –

सारणी 1: कानपुर महानगर में प्रवास के आधार पर मलिन बस्ती जनसंख्या

प्रवास के आधार पर	मलिन बस्ती जनसंख्या	
	उत्तरवादियों की जनसंख्या	उत्तरवादियों का प्रतिशत
प्रवासी	632	87.66
अनप्रवासी	89	12.34
कुल	721	100.00

Survey Data

कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों में जीवन दशाओं का अध्ययन

कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों की संख्या वर्तमान में 390 हैं जिसमें 2001 की जनगणना के अनुसार महानगरीय कुल जनसंख्या की 14.5% जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करती है। K.N.N. के एक अध्ययन के अनुसार 2006 में मलिन बस्तियों में महानगर की 20% जनसंख्या निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार मलिन बस्तियों में निवास करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत बढकर 25.23% हो गया।

कानपुर महानगर की मलिन बस्ती की आयु संरचना

महानगर की 4,19859 जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करती है जिनके पास 98208 आवास है। इस जनसंख्या में 5 वर्ष की आयु तक के 15%, 5–18 वर्ष की

आयु तक 30.1%, 18–35 वर्ष तक की आयु के 27.88%, 35–60 वर्ष की आयु के 21.78% 60 से ऊपर की आयु के 5.13% जनसंख्या सम्मिलित है (आरेख 1)।

आरेख 1: कानपुर की मलिन बस्ती आयु संरचना

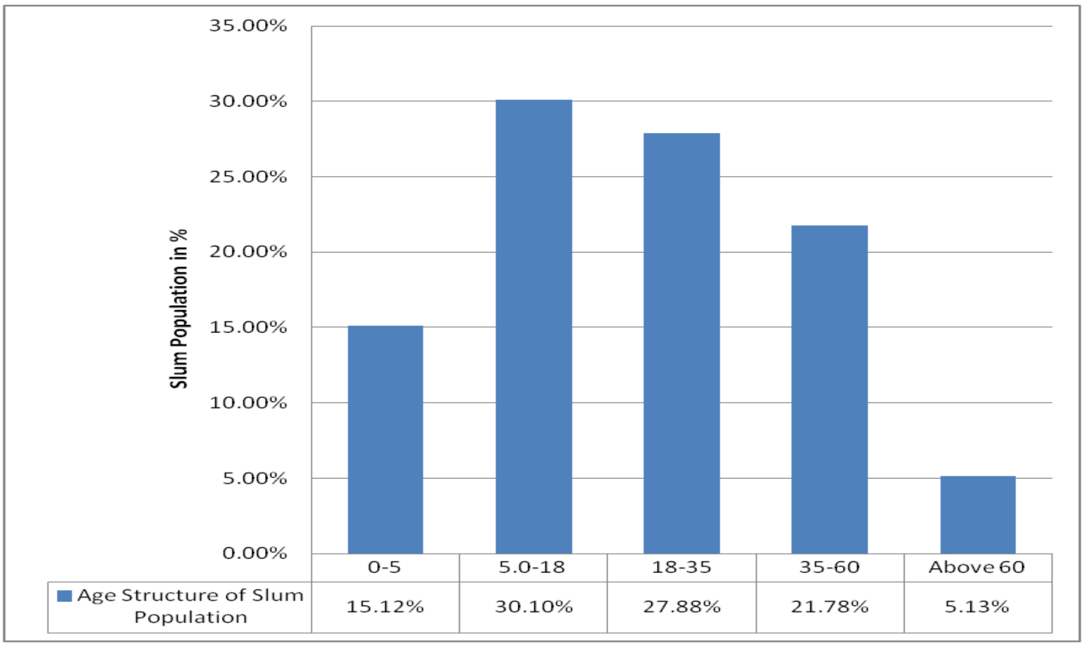

Survey Data

कानपुर महानगर की मलिन बस्ती की जातिगत संरचना

जातिगत संरचना का अध्ययन करें तो महानगर की मलिन बस्ती जनसंख्या में 19.56% सामान्य वर्ग, 39.25% अनुसूचित जाति, 25.52% पिछड़ा वर्ग और 15.67% जनसंख्या अल्पसंख्यक समुदाय से सम्बन्धित है (आरेख 2)।

आरेख 2: कानपुर महानगर की मलिन बस्ती की जातिगत संरचना

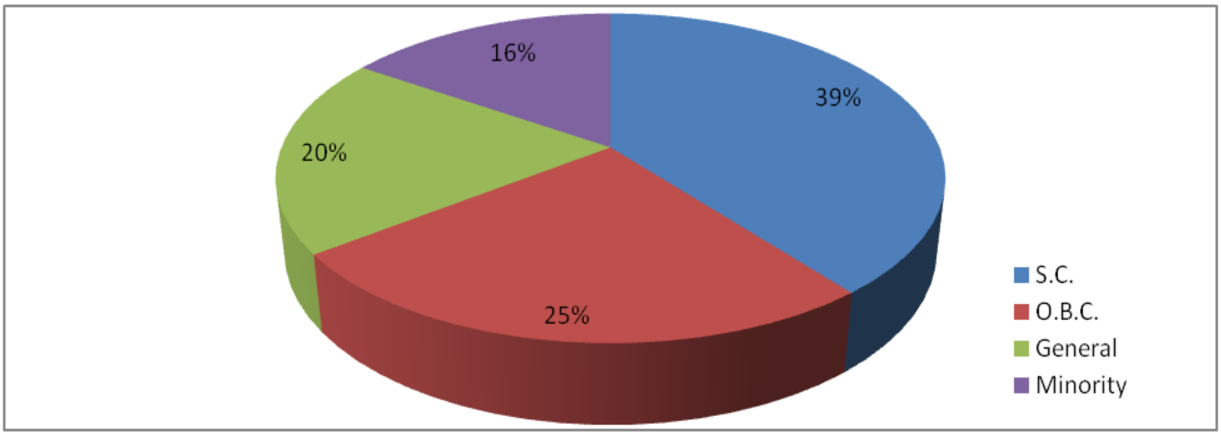

Survey Data

कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में शैक्षिक संरचना

मलिन बस्तियों में निवास करने वाली कुल जनसंख्या में से सिर्फ 35.9% जनसंख्या ही साक्षर है जिसमें 3.4% जनसंख्या स्नातक स्तर तक और सिर्फ 1.1% जनसंख्या परास्नातमक स्तर तक शिक्षित है (सारणी 2)।

सारणी 2: मलिन बस्तियों में शैक्षिक स्तर

क्र.सं.	शैक्षिक स्तर	कुल साक्षर प्रतिशत
1	निरक्षर	64.08
2	साक्षर	35.92
(i)	प्राइमरी	35.52
(ii)	जूनियर हाईस्कूल	19.31
(iii)	हाईस्कूल	14.67
(iv)	इंटर	25.87
(v)	स्नातक	3.47
(vi)	परास्नातक	1.16

Survey Data

मलिन बस्तियों में रोजगार

मलिन बस्ती में कार्य करने योग्य कुल जनसंख्या में से 24% (1,02,763) बेरोजगार। कुल रोजगार प्राप्त जनसंख्या में से 39% जनसंख्या स्वयं के कार्य में संलग्न है। जो यह प्रकट करती है अधिकांश जनसंख्या श्रमिक के रूप में कार्य करती है। सिर्फ 20% जनसंख्या सरकारी सेवा में संलग्न है। यह भी देखा गया है कि महिलाओं की अधिकांश जनसंख्या निकटवर्ती कालोनी के घरेलू सेवा कार्यों के रूप में रोजगार में संलग्न है साथ ही साथ बाल श्रम का अवैधानिक प्रारूप भी देखने को मिलता है (सारणी 3)।

सारणी 3: मलिन बस्तियों में रोजगार का स्तर

क्र.सं.	रोजगार प्रारूप	कुल रोजगार व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1.	सरकारी सेवा	13118	19.61
2.	अर्द्धसरकारी सेवा	10134	15.16
3.	निजी सेवा	17361	25.98
4.	स्वयं का कार्य	26227	39.25

Source : DUDA Survey Report 1997-98.

आय प्रारूप

मलिन बस्तियों में रहने वाली 21% घर ऐसे है जिनकी मासिक आय 500 रू0 प्रति माह से कम है तथा 49% घर ऐसे है जिनकी मासिक आय 500 रू0–1000 रू0 प्रतिमाह के मध्य है। सिर्फ 2.22 घर ऐसे हैं जिनकी प्रतिमाह आय 3000 से अधिक है (सारणी 4)।

सारणी 4: मलिन बस्तियों में आय स्तर

क्र.सं.	आय स्तर	प्रतिशत
1.	500 रू0 प्रतिमाह से कम	20.53
2.	500 रू0 से 800 रू0	25.10
3.	801 से 1000 रू0	23.72
4.	1001 से 1500 रू0	15.12
5.	1501 से 2000 रू0	8.46
6.	2001 से 3000 रू0	4.85
7.	3000रू0 से अधिक	2.22

Survey Data

मलिन बस्तियों में आवासीय दशा :–

मलिन बस्तियों में 51% घर ऐसे है जो कच्चे है, घास फूस, गारा और कच्ची ईंटों से बने हैं सिर्फ 21% घर ऐसे है जो पक्के हैं तथा 41% घर ऐसे है जो अनाधिकृत तथा जिन पर स्वयं का स्वामित्व नही हैं (सारणी 5)।

सारणी 5: मलिन बस्तियों में आवास

क्र.सं.	आवास प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	पक्का	21010	21.39
2.	अर्द्ध पक्का	22803	23.21
3.	कच्चा	37969	38.65
4.	झुग्गी झोपड़ी	12446	12.68
5.	अन्य	3990	4.07

DUDA Survye Report 1997-98

मलिन बस्तियों में प्राप्त मूलभूत एवं आवासीय सुविधाएं

महानगर की मलिन बस्तियों में 10.15 प्रतिशत आवास ऐसे है जिसे मूलभूत नगरीय सुविधाएं नहीं प्राप्त है अर्थात् न तो विद्युत, न सुरक्षित पेयजल और न ही शौचालय (सारणी 6)।

सारणी 6: मूलभूत सुविधाओं की प्राप्तता

आवास में बिजली, सुरक्षित पेयजल और शौचालय की उपलब्धता	कुल प्रतिशत
विद्युत	66.38%
सुरक्षित पेयजल	82.39%
शौचालय	63.61%
विद्युत और सुरक्षित पेयजल	59.63%
शौचालय और सुरक्षित पेयजल	57.82%
विद्युत और शौचालय	58.40%
तीनों सुविधाएं प्राप्त	53.32%
तीनो सुविधाएं अप्राप्त	10.15%

Kanpur Development Authority Vision Document, Draft Final Report, November, 2003

महानगर की मलिन बस्तियों में पेयजल 56.45 प्रतिशत जनसंख्या को सरकारी हैंडपम्प द्वारा प्राप्त होता है। 20.53 प्रतिशत निवासियों के पास निजी पम्प हैं। मलिन बस्तियों के 20.53 प्रतिशत निवासियों को पेय जल प्राप्त करने के लिए 51 से 100 मील उससे अधिक की दूरी तय करनी पड़ती हैं। मलिन बस्तियों के 20.53 प्रतिशत निवासी विद्युत की सुविधा से वंचित हैं। वर्तमान में 93.01% मलिन बस्ती निवासी मोबाईल जैसी संचार सुविधाओं से लाभान्वित है। मलिन बस्तियों के 20.53% निवासी के आवास में अलग रसोई घर हुआ करता है। मलिन बस्तियों के 12.35% निवासियों के आवासों में शौचालय थे। 28.71% जनसंख्या को सार्वजनिक शौचालय की सुविधा मुहैइय्या है वही 58.95% जनसंख्या आज भी खुले मैदानों में शौच को विवश है (सारणी 7)।

सारणी 7: मलिन बस्तियों में प्राप्त आवासीय सुविधाएं

आवास में सुविधाएं	कुल प्रतिशत
पेयजल	
सरकारीनल	23.02
निजी पम्प	20.53
सरकारी हैंडपम्प	56.45
पेयजल स्रोत्र की दूरी	
परिसर में	3.74
50 मी.	31.48

50 - 100	37.03
100 मी. से ऊपर	27.74
विद्युत	
हां	63.66
नही	36.34
मोबईल /टेलीफोन	
हां	61.03
नही	38.97
पृथक रसोईघर	
हां	31.21
नही	68.79
शौचालय प्रकार	
निजी शौचालय	12.34
सार्वजनिक शौचालय	28.71
खुले मैदान	58.95
परिसर में शौचालय	
हां	12.34
नही	87.66

Survey Data

ठोस कूड़ा प्रबन्धन तथा सीवर व्यवस्था

मलिन बस्तियों में या तो नालियाँ नहीं होती थी या फिर अस्थाई खुली कच्ची नालियाँ होती है। 74.76% मलिन बस्तियों में कच्ची नालियाँ पाई जाती है जो ठोस कूड़ा के उचित प्रबन्धन के अभाव में, सफाई के अभाव में जल निकास में अक्षम हो जाती है तथा अस्वास्थ्यकारी दशाएँ उत्पन्न करती है। महत्वपूर्ण तथ्य है कि सिर्फ 40% कूड़ा ही सरकारी/निजी व्यक्तियों द्वारा एकत्रित किया जाता है इसीलिए वर्षाकाल में यहां की दशा नरकीय होती है (सारणी 8)।

सारणी 8: मलिन बस्तियों में सीवर व्यवस्था

सीवर व्यवस्था	लाभान्वित जनसंख्या प्रतिशत
कच्ची नाली	74.76
पक्की नाली	25.24

Survey Data

भौगोलिक सूचना प्रणाली के आधार पर कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों एवं सुविधाओं की प्राप्तता का मानचित्र उद्धत किया गया।

मानचित्र 1 : कानपुर महानगर में मलिन बस्तियों एवं सुविधाओं की प्राप्तता

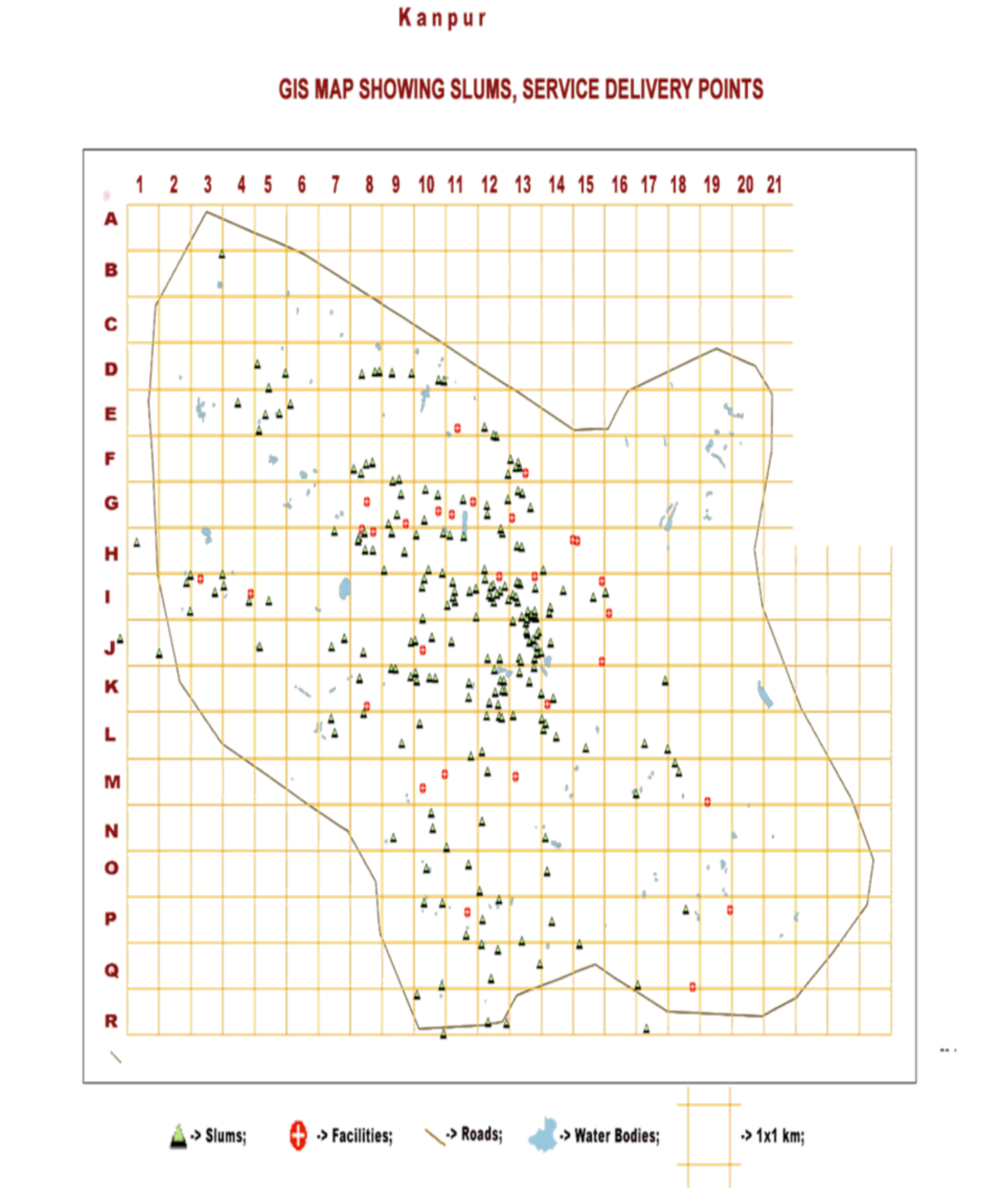

Source:Urban Health Initative 2012

© IJARMS Journal, 2018

मलिन बस्तियों के निवासियों का उपभोग स्तर

30.93% मलिन बस्तियों के निवासियों के पास हाथ घड़ी थी तथा इसी तरह 41.05% घड़ी मेज/घड़ी दीवार, 1.25% सिलाई मशीन, 87.38% साइकिल, 17.48% रेडियो/टेप, 59.50% पंखा/ कूलर, 45.91%कुकर, 38.70% टी.वी.कलर, 0.69% फ्रिज, 54.51% सी.डी./डी.वी.डी., 44.94% एल.पी.जी, 41.75% प्रेस तथा 3.05% लोहे की अलमारी का उपभोग करते है (सारणी 9)।

सारणी 9: मलिन बस्तियों के निवासियों का उपभोग स्तर

उपभोग वस्तुएँ	कुल प्रतिशत
घड़ी हाथ	30.93
घड़ी मेज / घड़ी दीवार	41.05
सिलाई मशीन	1.25
साइकिल	87.38
रेडियो/टेप	17.48
पंखा/ कूलर	59.50
कुकर	45.91
टी.वी. कलर	38.70
फ्रिज	0.69
सी.डी./डी.वी.डी.	54.51
एल.पी.जी	44.94
प्रेस	41.75
लोहे की अलमारी	3.05

Survey Data

नियोजन नीति

भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का यथोचित ध्यान न दिये जाने के कारण तथा कुछ विशेष क्षेत्रों में नगरीयकरण के फलस्वरूप उत्पन्न प्रादेशिक असमानता ने स्थानिक असंगठन को जन्म दिया ग्रामीण क्षेत्रों में हस्तशिल्पकला, कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास आज भी अपेक्षित है फलतः वहां पर बेरोजगारी है। अतः लोग प्रवास को विवश है। फलतः ये ग्रामीण गाँव से प्रवास कर जाते हैं और नगरीय सुख सुविधाओं के अभाव में भी ये नगरों में मलिन बस्ती में रहने लगते हैं । इस प्रकार से श्रमिकों का प्रवास न केवल गाँव से नगर होता है, अपितु यह प्रवास ग्रामीण निर्धनता से नगरीय निर्धनता की ओर होता है। कानपुर महानगर में अनियंत्रित निम्नस्तरीय प्रवास के कारण उत्पन्न मलिन बस्तियों का नगरीय

अवनयन को रोकने हेतु महानगर में समायोजन हेतु यह आवश्यक है कि नियोजन नीति प्रस्तुत की जाए :

विचारणीय उपायों पर एक पुर्नदृष्टि

1. ग्रामीण और प्रादेशिक विकास को अधिक प्रभावशाली बनाना।
2. स्थानिक पुनसंरचना पर बल देना।
3. छोटे कस्बों का विकास करना।
4. रोजगार के अवसरों का निर्माण।
5. नगरीय गरीबी का उन्मूलन ।
6. महानगर की 20%जनसंख्या का मलिन बस्ती में निवास करने वालों का पुनर्वसाव।
7. जनसंख्या पुनर्बसाब में जनसंख्या तथा उनके रोजगार स्थल एवं आवास के मध्य दूरी के अनुसार आवास आवंटित करना।
8. ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन नीतियों का सफल क्रियान्वयन।
9. समाकलित विकास।
10. ग्रामीण औद्योगीकरण।
11. ग्रामीण नगरीय अन्तर्सम्बन्धों में परिवर्तन।
12. परिधीय ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग का विकास।
13. उद्योग और कृषि को समाकलित करना।
14. उपेक्षित क्षेत्रों का विकास।
15. मलिन बस्तियों में सरकारी नलों से पेय जल की व्यर्थता को रोकना।
16. जल पाइप लाइन आपूर्ति की गुणवत्ता में सुधार।
17. सीवर व्यवस्था सुचारू करना तथा समय–समय पर सफाई का ध्यान देना।
18. ठोस कूड़ा करकट का उचित प्रबन्धन।
19. सामुदायिक शौचालयों की गुणवत्ता में सुधार तथा संख्या में वृद्धि ताकि पर्यावरण प्रदूषित न हो।
20. मलिन बस्तियों में अपराधियों की शरण स्थली के रूप में विकसित होने से रोकना।

उपसंहार

नगर में विभिन्न समस्याओं आवास, पेयजल, शौचालय, बिजली का अभाव जैसी समस्याओं का सामना करते हुए प्रवासी मलिन बस्तियों के निर्माण का कारण बनते हैं और नगरों का ग्रामीणकरण प्रारम्भ हो जाता है। अगर नियोजन नीतियों को ध्यान में नहीं रखा गया तो यह प्रवास ग्राम से नगर की ओर नहीं अपितु ग्रामीण गरीबी का नगरीय गरीबी की ओर होगा (मुखर्जी, 2000, पृ. 2) और इस

प्रकार मलिन बस्तियों को जन्म देने वाला होगा जिससे कोई सामाजिक आर्थिक विकास उत्पन्न नहीं होगा। इस प्रकार कानपुर महानगर का सन्तुलित विकास में विकेन्द्रीकृत नियोजन द्वारा किया जा सकता है।

References

1. Agnihori, P. (1994), Poverty amidst prosperity: survey of slum, Published by M.D.Publication, New Delhi.
2. Jefferson, M. (1939), The Law of Primate City, Geographical Review, Vol.28, p. 446.
3. Kumara, V.K. and Kayastha, S.L. (1982), Kanpur City: A Study in Environmental Pollution, Published by Tara Publication, Varanasi.
4. Majumdar, D.N. (1960), Social Contours of an Industrial City: Social Survey of Kanpur, 1954-56, Bombay.
5. Mukherji, S (2000), Low Quality Migration in India: The Phenomena of Distressed Migration and Acute Urban Decay, 24th IUSSP Conference, Salvador, Brazil.
6. Singh, H.H (1972), Kanpur: A study in Urban Geography, Indrasini Devi, Varanasi.
7. Singh, S.N. (1990), Planning and Development of an Industrial Town, Published by Mittal Publication, New Delhi.
8. Sinha,R and Sinha, U.P.(2007), Ecology and Quality of Life in Urban Slums : An Empirical Study, Published by Concept Publication, New Delhi.
9. Tabassum, H. (2011), Slum in India, Published by A.B.D Publication, New Delhi.